ISSN: 2395-7852

International Journal of Advanced Research in Arts, Science, Engineering & Management

Volume 10, Issue 4, July 2023

INTERNATIONAL STANDARD SERIAL NUMBER INDIA

Impact Factor: 6.551

+91 9940572462 +91 9940572462 ijarasem@gmail.com www.ijarasem.com

International Journal of Advanced Research in Arts, Science, Engineering & Management (IJARASEM)

| ISSN: 2395-7852 | www.ijarasem.com | Impact Factor: 6.551 |Bimonthly, Peer Reviewed & Referred Journal|

| Volume 10, Issue 4, July 2023 |

सावित्रीबाई फुले का शिक्षा में योगदान

Dr. Neetu Jewaria

Assistant Professor, History, Govt. College, Khairtal, Rajasthan, India

सार

Savitri Bai Phule (3 जनवरी 1831 – 10 मार्च 1897) भारत की प्रथम महिला शिक्षिका, समाज सुधारिका एवं मराठी कवियत्री थीं। उन्होंने अपने पति ज्योतिराव गोविंदराव फुले के साथ मिलकर स्त्री अधिकारों एवं शिक्षा के क्षेत्र में उल्लेखनीय कार्य किए। उन्हें आधुनिक मराठी काव्य का अग्रदूत माना जाता है। 1848 में उन्होंने बालिकाओं के लिए एक विद्यालय की स्थापना की।[1] सावित्रीबाई फुले का जन्म 3 जनवरी 1831 को हुआ था। इनके पिता का नाम खन्दोजी नैवेसे और माता का नाम लक्ष्मीबाई था। सावित्रीबाई फुले का विवाह 1840 में ज्योतिराव फुले से हुआ था।[2] सावित्रीबाई फुले भारत के पहले बालिका विद्यालय की पहली प्रिंसिपल और पहले किसान स्कूल की संस्थापक थीं। महात्मा ज्योतिराव को महाराष्ट्र और भारत में सामाजिक सुधार आंदोलन में एक सबसे महत्त्वपूर्ण व्यक्ति के रूप में माना जाता है। उनको महिलाओं और दलित जातियों को शिक्षित करने के प्रयासों के लिए जाना जाता है। ज्योतिराव, जो बाद में ज्योतिबा के नाम से जाने गए सावित्रीबाई के संरक्षक, गुरु और समर्थक थे। सावित्रीबाई ने अपने जीवन को एक मिशन की तरह से जीया जिसका उद्देश्य था विधवा विवाह करवाना, छुआछूत मिटाना, महिलाओं की मुक्ति और दलित महिलाओं को शिक्षित बनाना। वे एक कवियत्री भी थीं उन्हें मराठी की आदिकवियत्री के रूप में भी जाना जाता था।

सामाजिक मुश्किलें

वे स्कूल जाती थीं, तो विरोधी लोग उनपर पत्थर मारते थे। उन पर गंदगी फेंक देते थे। आज से 191 साल पहले बालिकाओं के लिये जब स्कूल खोलना पाप का काम माना जाता था तब ऐसा होता था।

सावित्रीबाई पूरे देश की महानायिका हैं। हर बिरादरी और धर्म के लिये उन्होंने काम किया। जब सावित्रीबाई कन्याओं को पढ़ाने के लिए जाती थीं तो रास्ते में लोग उन पर गंदगी, कीचड़, गोबर, विष्ठा तक फेंका करते थे। सावित्रीबाई एक साड़ी अपने थैले में लेकर चलती थीं और स्कूल पहुँच कर गंदी कर दी गई साड़ी बदल लेती थीं। अपने पथ पर चलते रहने की प्रेरणा बहुत अच्छे से देती हैं। 5 सितंबर 1848 में पुणे में अपने पति के साथ मिलकर विभिन्न जातियों की नौ छात्राओं के साथ उन्हों ने महिलाओं के लिए एक विद्यालय की स्थापना की। एक वर्ष में सावित्रीबाई और महात्मा फुले पाँच नये विद्यालय खोलने में सफल हुए। तत्कालीन सरकार ने इन्हे सम्मानित भी किया। एक महिला प्रिंसिपल के लिये सन् 1848 में बालिका विद्यालय चलाना कितना मुश्किल रहा होगा, इसकी कल्पना शायद आज भी नहीं की जा सकती। लड़कियों की शिक्षा पर उस समय सामाजिक पाबंदी थी। सावित्रीबाई फुले उस दौर में न सिर्फ खुद पढ़ीं, बल्कि दूसरी लड़कियों के पढ़ने का भी बंदोबस्त किया।[3] केजश्ष बीडीएनएक्स ए डी सेक्स। क्ली। स्ंसक केक डी इंक आर ए नाकब्दबेजकेज एफ ए सांस दिन

परिचय

सावित्रीबाई फुले भारत की सबसे पहली महिला शिक्षिका थी। सावित्री बाई का जन्म 3 जनवरी 18 से 31 को हुआ था। इसी के साथ साथ वह एक कवयित्री और एक समाज सुधारक भी थी। सावित्रीबाई की माता का नाम सत्यवती और पिताजी का नाम खंडोजी नेवैसे पाटिल था।[1,2]

सावित्रीबाई ने 1846 में शादी की थी। शादी के दौरान सास के द्वारा शादी से पहले ईसाई मिशनरियों द्वारा सावित्रीबाई को एक किताब लाकर दी गई थी, उन्होंने उस में नया रास्ता खोजा था। सावित्री बाई की सास के द्वारा सावित्रीबाई को पढ़ाया गया। 1 जनवरी 1848 में भिड़े वाड़ा में लड़कियों के लिए एक स्कूल को शुरू किया गया था।

इसके बाद सावित्रीबाई ने सत्यशोधक समाज के कार्य में वहां पर महत्वपूर्ण भूमिका निभाई। जब महात्मा फुले का निधन हुआ, इसके पश्चात सत्यशोधक समाज के कार्य की सारी जिम्मेदारी सावित्रीबाई पर आ गई थी। उन्होंने अपने विचारों को फैलाने के लिए काव्या फुले और भावनाक्षी सुबोध रत्नाकर नामक कविताओं का एक संग्रह भी लिखा था।

इसी के साथ उन्होंने कई क्रूर प्रथाओं जैसे बाल विवाह, सती, हज्जाम की दुकान, इत्यादि का विरोध भी किया था। इसके बाद उन्होंने महात्मा ज्योतिबा फुले द्वारा स्थापित सत्यशोधक समाज के काम में भी अपना योगदान दिया था।

सावित्रीबाई के द्वारा कई जगहों पर समाज की भलाई के लिए भाषण भी दिए गए और उनका मिशन था कि वह अनाथों को अनाथालय प्रदान करें। 1897 को जब भयानक प्लेग फैला था तब सावित्रीबाई के द्वारा मरीजों की सेवा की गई। इसी दौरान वह खुद भी प्लेग की शिकार हो गई थी। इसके पश्चात 10 मार्च 1897 को उनका भी निधन हो गया था।

सावित्रीबाई फुले का जन्म 3 जनवरी 1831 में हुआ था। उनका जन्म महाराष्ट्र के एक किसान परिवार में हुआ था। सावित्री बाई के पिता का नाम खंडोजी नेवसे था और माता का नाम लक्ष्मी बाई था। इसी के साथ सावित्रीबाई भारत की सबसे पहली महिला शिक्षिका भी रही और कवित्री और समाज सेविका भी रही थी।[3,4]

सावित्रीबाई की जिंदगी का सिर्फ एक ही लक्ष्य था कि लड़कियों को शिक्षित किया जाए। 9 वर्ष की आयु में सावित्रीबाई फुले का विवाह हो गया था। सावित्रीबाई एक बुद्धिमान व्यक्ति थी, इन्हें मराठी भाषा का भी ज्ञान था।

सावित्रीबाई की शिक्षा

सावित्रीबाई एक किसान परिवार की थी, इसके बावजूद भी वह भारत की पहली शिक्षिका बनी। इसी के साथ वह एक समाज सेविका भी बने और कवियत्री के रूप में भी उभरी सावित्रीबाई के द्वारा दो काव्य पुस्तकें भी लिखी गई थी, पहला काव्य उनका फुले और दूसरा बावनकशी सुबोधरत्नाकर था।

सावित्री बाई का जीवन

सावित्रीबाई अपने जीवन में कुछ अच्छा करना चाहती थी। इसके लिए उनका बस एक ही लक्ष्य था कि किसी भी तरह से महिलाओं को शिक्षित किया जाए और उन्होंने इसके लिए कई कदम भी उठाए। 1848 में उन्होंने जब सावित्रीबाई फुले जी को बच्चे पढ़ाने जाती थी, सब लोग उन पर गोबर की बरसात करते थे। अर्थात उनको गोबर फेक कर मारते थे, और उन लोगों का कहना था कि शूद्र से अति शूद्र लोगों को पढ़ाने का अधिकार नहीं होता है, इसीलिए लोगों के द्वारा सावित्रीबाई को रोका जाता था।

इतना सब होने के पश्चात भी सावित्रीबाई नहीं रुकी और वह हमेशा अपना झोला लेकर चलती रही। उस झोले में हमेशा वह एक जोड़ी कपड़े रखा करती थी और जब लोग उन्हें गोबर से मारते थे तब उनके कपड़े गंदे हो जाते थे, इसीलिए वह स्कूल में पहुंचकर अपने कपड़ों को बदल लिया करती थी, इसके पश्चात बच्चों को पढ़ाया करती थी।

सावित्री बाई का लक्ष्य

सावित्री बाई का सिर्फ एक ही लक्ष्य था कि किसी भी तरह बच्चियों को पढ़ाया जाए। इसी के साथ उन्होंने कई प्रथाओं पर रोक हटाई और उन्हें उन पर कामयाबी में मिली जैसे की विधवा विवाह करना, छुआछूत को मिटाना, महिलाओं को समाज में उनका अधिकार दिलवाना और महिलाओं को शिक्षित करना, इन सब के दौरान सावित्रीबाई ने खुद के 18 स्कूल भी खोलें सबसे पहले उनका स्कूल पुणे में खुला था।[5,6]

उनके द्वारा जब पहला स्कूल खोला गया था तब केवल 9 बच्चे ही उस स्कूल में आते थे और उन्हें भी वह पढ़ाती थी। परंतु 1 वर्ष के अंदर बहुत सारे बच्चे आने लग गए थे।

सावित्रीबाई के द्वारा 3 जनवरी 1848 को अपने जन्मदिन पर उन्होंने अपना सबसे पहला स्कूल खोला था, जिसमें 9 अलग-अलग जातियों के बच्चों को लेकर उन्होंने पढ़ाना शुरू किया था। इसके पश्चात उन्होंने धीरे-धीरे यह मुहिम चलाई की महिलाओं को शिक्षित करना अनिवार्य है और उन्होंने इस मुहिम में सफलता भी पाई इसके पश्चात सावित्रीबाई फुले और उनके पति ज्योतिबा फुले दोनों ने मिलकर 5 स्कूलों का निर्माण करवाया।

उस समय लोगों की बहुत ही गलत विचारधारा थी कि लड़कियों को नहीं पढ़ाना चाहिए। इसी के साथ सावित्रीबाई ने इस विचारधारा को भी बदल कर रख दिया और लोगों को यह भी समझा दिया कि पढ़ने का अधिकार जिस प्रकार लड़कों को है, उतना ही लड़कियों को भी मिलना चाहिए।

इसके लिए सावित्रीबाई ने बहुत संघर्ष किया। इसके बाद उन्होंने एक केंद्र की भी स्थापना की, जहां पर उन्होंने विधवा महिलाओं को पुनर्विवाह के लिए भी प्रेरित किया। इसी के साथ अछूतों के अधिकारों के लिए भी संघर्ष किया गया।

| ISSN: 2395-7852 | www.ijarasem.com | Impact Factor: 6.551 |Bimonthly, Peer Reviewed & Referred Journal|

| Volume 10, Issue 4, July 2023 |

सावित्रीबाई और उनके पति ज्योतिबा फुले दोनों ही एक समाज सुधारक थे। उन दोनों ने मिलकर समाज की बहुत अच्छे प्रकार से सेवा की थी। परंतु उनकी कोई संतान नहीं थी, इसीलिए उन्होंने एक ब्राह्मण विधवा के पुत्र यशवंतराव को गोद ले लिया था। इस बात का विरोध पूरे परिवार के सभी सदस्यों ने किया इसीलिए, उन्होंने अपने परिवार से अपना संबंध समाप्त कर दिया।

सावित्री बाई का सम्मान

1852 मैं तत्कालीन ब्रिटिश सरकार ने पूरे दंपत्ति को महिला शिक्षा के क्षेत्र में योगदान देने के लिए भली प्रकार सम्मानित किया। इसी के साथ केंद्र और महाराष्ट्र सरकार ने सावित्रीबाई फुले की स्मृति के रूप में भी कई पुरस्कारों की स्थापना की थी।

इन सब के साथ ही सावित्री जी के सम्मान में एक डाक टिकट भी जारी किया गया था। क्योंकि यह आधुनिक शिक्षा में सबसे पहली महिला शिक्षिका है। इन्हें मराठी भाषा का भी अच्छा ज्ञान था, इसीलिए इन्हें मराठी भाषा का अगुवा माना जाता है।[7,8]

सावित्रीबाई के द्वारा एक कविता भी लिखी गई थी, जो मराठी भाषा में थी, जो मराठी भाषा में आज के समय में एकदम सटीक काम कर रही है और इसकी जरूरत आधुनिक लोगों को सबसे ज्यादा पड़ रही है।

सावित्री बाई का निधन

1897 में जब लोग प्लेग से ग्रसित हो रहे थे तब सावित्रीबाई और उनके पुत्र के द्वारा एक अस्पताल खोला गया और उस अस्पताल में अछूतों का इलाज भी किया गया। परंतु इस बीमारी के दौरान सावित्रीबाई खुद भी इस बीमारी का शिकार हो गई और उनका निधन हो गया।

हमारे भारत में कई ऐसे लोग हुए हैं, जो आज भी सम्मान के काबिल हैं। उन्होंने हमारे भारत के लिए और भारत के लोगों के लिए बहुत से ऐसे काम किए हैं, जिसकी वजह से आज लोगों को अपने हक मिल रहे हैं। इसीलिए हमें ऐसे लोगों का सम्मान करना चाहिए।

सावित्रीबाई के द्वारा आज लड़कियों को पढ़ाई में इतना महत्व दिया जाता है और उन्हें पढ़ने के लिए भेजा जाता है, इसीलिए सावित्रीबाई को हम शत शत नमन करते हैं।

विचार-विमर्श

सावित्रीबाई फुले एक उल्लेखनीय महिला थीं जिन्होंने भारत में महिलाओं की शिक्षा और सामाजिक सुधार को बढ़ावा देने के लिए अपना जीवन समर्पित कर दिया। लिंग और जाति की बाधाओं को तोड़ने और एक अधिक न्यायसंगत समाज बनाने के उनके अथक प्रयासों ने भारत और उसके बाहर महिलाओं की कई पीढ़ियों को प्रेरित किया है।

एक शिक्षक, कवि और सामाजिक कार्यकर्ता के रूप में सावित्रीबाई के काम ने भारत में महिला शिक्षा की नींव रखी और सामाजिक न्याय और समानता के एक नए युग की शुरुआत करने में मदद की। उनकी विरासत दुनिया भर के समाज सुधारकों और कार्यकर्ताओं को प्रेरित करती रही है, और वह साहस, करुणा का प्रतीक बनी हुई हैं।

भारत में महिलाओं के अधिकारों और सामाजिक सुधार में सावित्रीबाई फुले के योगदान को हमेशा उन लोगों के लिए आशा और प्रेरणा के रूप में याद किया जाएगा जो एक बेहतर दुनिया के लिए प्रयास करते हैं।

सावित्रीबाई फुले एक भारतीय समाज सुधारक, शिक्षाविद् और कवियित्री थीं, जिन्होंने देश में महिलाओं के उत्थान के लिए अपना जीवन समर्पित कर दिया। वह महिलाओं की शिक्षा के क्षेत्र में अग्रणी थीं और उन्होंने भारत में महिलाओं के अधिकारों के लिए आंदोलन में महत्वपूर्ण भूमिका निभाई। इस निबंध में हम सावित्रीबाई फुले के जीवन, कार्य और विरासत के बारेमें जानेंगे।[9,10]

| ISSN: 2395-7852 | www.ijarasem.com | Impact Factor: 6.551 |Bimonthly, Peer Reviewed & Referred Journal|

| Volume 10, Issue 4, July 2023 |

सावित्रीबाई फुले की प्रारंभिक जीवन और शिक्षा:

सावित्रीबाई फुले का जन्म 1831 में महाराष्ट्र, भारत में एक किसान परिवार में हुआ था। उनकी शादी नौ साल की उम्र में ज्योतिराव फुले से हुई थी, जो बाद में एक प्रमुख समाज सुधारक बने। अपने परिवार और समाज के विरोध सहित कई बाधाओं का सामना करने के बावजूद, सावित्रीबाई ने अपनी शिक्षा जारी रखी और भारत की पहली महिला शिक्षिका बनीं।

महिला शिक्षा के लिए आंदोलन:

सावित्रीबाई फुले ने भारत में महिला शिक्षा के आंदोलन में महत्वपूर्ण भूमिका निभाई। सामाजिक और सांस्कृतिक मानदंडों के कारण शिक्षा से वंचित लड़कियों को शिक्षा प्रदान करने के उद्देश्य से उन्होंने और उनके पति ने 1848 में पुणे में लड़कियों के लिए पहला स्कूल शुरू किया। उन्हें समाज में रूढ़िवादी तत्वों से विरोध और शत्रुता का सामना करना पड़ा, लेकिन सावित्रीबाई महिला शिक्षा के लिए अथक रूप से काम करती रहीं।

महिला सशक्तिकरण:

सावित्रीबाई फुले महिलाओं को शिक्षा प्रदान करके उन्हें सशक्त बनाने में विश्वास करती थीं, और उन्होंने जीवन भर इस लक्ष्य के लिए काम किया। उन्होंने बाल विवाह की प्रथा के खिलाफ भी लड़ाई लड़ी और विधवाओं के अधिकारों की वकालत की। वह महिलाओं की समानता में दृढ़ विश्वास रखती थीं और उन्होंने भारत में महिलाओं के अधिकारों के संघर्ष में महत्वपूर्ण भूमिका निभाई थी।[11,12]

साहित्यिक योगदान:

सावित्रीबाई फुले एक विपुल कवयित्री और लेखिका भी थीं। उन्होंने सामाजिक सुधार को बढ़ावा देने और बाल विवाह और महिला शिक्षा जैसे मुद्दों के बारे में जागरूकता फैलाने के लिए अपने साहित्यिक कौशल का इस्तेमाल किया। उनकी कविताएँ अक्सर भारतीय समाज में प्रचलित दमनकारी प्रथाओं की आलोचना करती थीं और समानता और सामाजिक न्याय का आह्वान करती थीं। उन्हें मराठी कविता के अग्रदूतों में से एक माना जाता है और उनका काम आज भी लेखकों और कवियों को प्रेरित करता है।

देखभाल केंद्रों की स्थापना:

सावित्रीबाई फुले ने यौन शोषण और वेश्यावृत्ति की शिकार महिलाओं के लिए देखभाल केंद्र स्थापित किए। उन्होंने इन महिलाओं की दुर्दशा को पहचाना और उन्हें एक सुरक्षित स्थान, शिक्षा और व्यावसायिक प्रशिक्षण प्रदान करने के लिए काम किया।

भारत में शिक्षा और सामाजिक सुधार के क्षेत्र में सावित्रीबाई फुले के योगदान को कम करके नहीं आंका जा सकता है। उन्होंने देश में महिला शिक्षा की नींव रखी और महिलाओं की कई पीढ़ियों को शिक्षा और समानता के लिए प्रेरित किया। उनके काम ने भारत में महिलाओं के सशक्तिकरण का मार्ग प्रशस्त किया और आज भी समाज सुधारकों और कार्यकर्ताओं को प्रेरित करता है।

1. सावित्रीबाई फुले एक समाज सुधारक, शिक्षाविद और कवयित्री थीं।
2. सावित्रीबाई फुले के पिता का नाम Khandoji Neveshe Patil और माता का नाम लक्ष्मी था।
3. उनका जन्म 1831 में महाराष्ट्र, भारत में हुआ था।
4. वह भारत की पहली महिला शिक्षिका थीं।
5. सावित्रीबाई और उनके पति ने 1848 में पुणे में लड़कियों के लिए पहला स्कूल स्थापित किया।
6. वह महिला शिक्षा और सशक्तिकरण की चैंपियन थीं।
7. उन्होंने यौन शोषण और वेश्यावृत्ति की शिकार महिलाओं के लिए देखभाल केंद्र स्थापित किए।
8. सावित्रीबाई एक विपुल कवि और लेखिका थीं जिन्होंने सामाजिक सुधार को बढ़ावा देने के लिए अपने साहित्यिक कौशल का उपयोग किया।
9. उन्होंने भारत में महिलाओं के अधिकारों के लिए आंदोलन में एक महत्वपूर्ण भूमिका निभाई।
10. सावित्रीबाई फुले की विरासत दुनिया भर के समाज सुधारकों और कार्यकर्ताओं को प्रेरित करती रही है।[13,14]

| ISSN: 2395-7852 | www.ijarasem.com | Impact Factor: 6.551 |Bimonthly, Peer Reviewed & Referred Journal|

| Volume 10, Issue 4, July 2023 |

अंत में, सावित्रीबाई फुले भारत में महिला शिक्षा और सामाजिक सुधार के क्षेत्र में अग्रणी थीं। महिलाओं की शिक्षा और सशक्तिकरण के लिए उनकी अटूट प्रतिबद्धता ने भारतीय समाज पर एक अमिट छाप छोड़ी है। वह साहस और दृढ़ संकल्प का प्रतीक हैं, और उनकी विरासत महिलाओं की पीढ़ियों को अपने अधिकारों के लिए लड़ने और अपने सपनों को आगे बढ़ाने के लिए प्रेरित करती है।

परिणाम

सावित्रीबाई जी का पूरा नाम सावित्रीबाई ज्योतिराव फुले है। सावित्रीबाई जी का जन्म 3 जनवरी को सन 1831 में हुआ था तथा इनकी मृत्यु 10 मार्च 1897 को हुई थी। ज्योतिराव फुले इनके पति का नाम था।

इनका विवाह ज्योतिराव फुले से सन 1840 में हुआ था। यह भारत की एक ऐसी प्रथम महिला थी जो कि शिक्षिका, समाज सुधारिका एवं मराठी कवियत्री थीं। इन्हें आधुनिक मराठी काव्य का अग्रदूत भी माना जाता है। उन्होंने बालिकाओं के लिए 1852 में एक विद्यालय की स्थापना की। साथ ही यह भारत के पहले बालिका विद्यालय की पहली प्रिंसिपल और पहले किसान स्कूल की संस्थापक भी थीं।

सावित्रीबाई फुले के पिता जी का नाम खन्दोजी नैवेसे तथा माता का नाम लक्ष्मी था। सावित्रीवाई फुले को महिलाओं और दलित जातियों को शिक्षित करने के प्रयासों के लिए जाना जाता है। साथ ही यह देश की पहली महिला अध्यापिका व नारी मुक्ति आंदोलन की पहली नेता थीं, जिन्होनें उन्नीसवीं सदी में छुआ-छूत, सतीप्रथा, बाल-विवाह, तथा विधवा-विवाह निषेध जैसी कुरीतिओं को समाप्त करने के लिए भी आवाज़ उठाई थी।

बेबसी की जंजीरो से छुड़ा लिया जिसने अपना दामन है,
खुले आसमान की छाव में दुनिया में आज उसका नाम है।
कल्पना चावला की बात करे या किरण बेदी को सलाम करे,
हर क्षेत्र में नारी ने बनायी आज अपनी अद्भूत पहचान है॥

आदरणीय प्रधानाचार्य जी, समस्त सिक्षकगण और मेरे प्यारे सहपाठियों,
आज इस मंच पे एक ऐसी शख्सियत से आप सबको रूबरू करवाना चाहती हू, जिनके बारे में कही लोग नही जानते होंगे, पर जिनके वजह से ही आज महिला शिक्षित हो पाई है, बाल विवाह पर लगे प्रतिबंध है, और विधवा पे हो रहे अत्याचारों पे लगी लगाम है और नारी जाति का हुआ कल्याण है।

सावित्री बाई फुले देश की पहली महिला शिक्षिका जिन्होंने नारी जाति के हित में अपना पूरा जीवन लगा दिया और समाज में व्याप्त हो रही कुरीतियों को जड़ से उखाड़ दिया। 3 जनवरी 1831 को महाराष्ट्र के सतारा जिले के नायगांव में सावित्री बाई फुले का जन्म हुआ, और 9 वर्ष में उनकी शादी 12 वर्ष के ज्योतिराव फुले से करा दी गई।

ज्योतिराव ने सावित्री बाई फुले को न सिर्फ शिक्षित किया, बल्कि उन्हें राष्ट्र निर्माण के लिए इसे तैयार किया जैसे किसी सांचे से सोना तप कर तैयार होता है। ज्योतिराव और सावित्री बाई फुले ने 1848 में लड़कियों के लिए पहली स्कूल की शुरआत की और धीरे धीरे उन्होंने 18 स्कूल खोल दिए।

कहा जाता है जब सावित्रीबाई फुले लड़कियों को शिक्षित करने स्कूल जाती थी, तब लोग उनपर कीचड़, गोबर, पत्थर और यहां तक विष्ठा पे फेंक देते है, सावित्रीबाई फुले एक साड़ी साथ में रखती थी और विद्यालय जाकर बदल देती थी। पर उनके दृढ़ संकल्प की बात ही निराली थी
कहते भी है।

जब नारी कुछ करने की ठान ले
तो पर्वत भी झुक जाता है
नदिया रास्ता दे देती है
साहिल देखते रह जाती है
प्रकति मुस्कुराती है
क्योंकि उसके जज़्बे को देख
आसमा के तारे भी तो खुशी मनाते है।

| ISSN: 2395-7852 | www.ijarasem.com | Impact Factor: 6.551 |Bimonthly, Peer Reviewed & Referred Journal|

| Volume 10, Issue 4, July 2023 |

सावित्रीबाई फुले नारी समाज का ऐसा उदाहरण है जिन्होंने पुरुषप्रधान समाज को हिला कर रख दिया, खोकली हुई नीव को निकाल, समानता की एक ऐसी छवि प्रस्तुत की, जहा नारी को सिर्फ मान, सम्मान न मिला, बल्कि उन्हें स्वाभिमान की जिंदगी जीने की नई राह मिली और जो भी अत्याचार और जुल्म उन पर हो रहे थे, उनसे बाहर निकलने की और लड़ने का हौसला मिला।

एक खिलता हुआ गुलाब या पराधीनता की बेड़ियों में जकड़ा हुआ गुलज़ार
ख़्वाशियो का सूरज या ढलती शाम की प्यारी सी मरहम
सुख दुख का दर्पण या सपनो को रौंद कर देती तुम्हारे सपनो को नया आसमान

उस समय एक कन्या का बाल विवाह उससे बड़ी उमर के साथ हो जाता था और अगर वो विधवा हो जाए तो उसके बाल मुंडवा दिए जाते है और उन्हें किसी भी सामाजिक कार्य में आने की अनुमति नहीं होती और तो और अत्याचार और अलग होते थे।

तब सावित्री बाई फुले ने विधवाओं के लिए अपने घर मे ही केयर सेंटर खोल दिया और महिलाओं को शिक्षित कर एक इसे समाज की नीव रखी जहा महिला को समान अधिकार मिला, और जो लोग कल पत्थर फेंका करते थे और वही लोग महिला का सम्मान करने लगे ।

नारी मान है, सम्मान है, घर का स्वाभिमान है
मत रोंदो उसे वह जगत का आधार है
आज नहीं वो बेबस और लाचार है
आज वो धारण कर चुकी दुर्गा का भी अवतार है।
कहते है उस समय भयंकर प्लेग फैला, सावित्री बाई फुले ने मरीजों की देखभाल करने के लिए एक क्लिनिक खोला और लोगो की देखभाल करते हुए उन्हें भी प्लेग हो गया और 10 मार्च 1897 को उनका निधन हो गया। अंत में चार पंक्तियों से अपनी वाणी को विराम देती हु और सावित्री बाई फुले के चरणों में वंदन करती हूँ,

एक टहनी एक दिन पटवार बनती है
एक चिंगारी दहक अंगार बनती है
जो सदा रोंदी गई बेबस समझकर
एक दिन मिट्टी वही मीनार बनती है।

निष्कर्ष

समाज में महिलाओं और दलितों की शिक्षा का महत्व समझने के बाद सावित्रीबाई फुले ने समाज में जिल्लत की जिंदगी जीने वाली दलित महिलाओं के लिए व्यापक स्तर पर शिक्षण अभियान की शुरुआत की और स्वयं देश की पहली महिला शिक्षिका बन गई।

सावित्रीबाई फुले ने दलित महिलाओं की शिक्षा को बढ़ावा देने के लिए एक दो नहीं बल्कि 18 बालिका विद्यालय खोलें और इन विद्यालयों के माध्यम से समाज की पिछड़ी हुई दलित महिलाओं को पढ़ने लिखने का अवसर प्रदान किया। सन 1848 में इन्होंने पहली बार भारत में बालिका विद्यालय की स्थापना की। इन्होंने अपने पति ज्योतिबा फुले और अपनी सहयोगी तथा पहली मुस्लिम महिला शिक्षिका फातिमा शेख के साथ मिलकर महाराष्ट्र के पुणे में भारत के पहले बालिका विद्यालय की नींव रखी।

दलित महिलाओं की शिक्षा में व्यापक क्रांति लाने के बाद सावित्रीबाई फुले ने एक समाज सेविका के तौर पर भी काम किया और अपने पति तथा महान समाज सेवक ज्योतिबा फुले के साथ मिलकर समाज सुधारक आंदोलनों में हिस्सा लिया। इन्होंने छुआछूत, दहेज प्रथा, बाल विवाह, विधवा सती प्रथा जैसी अनेक कुरीतियों के खिलाफ जोरदार आवाज उठाई और इनका विरोध किया।

समाज सुधारक आंदोलनों और दलित महिलाओं की शिक्षण में उत्थान के लिए सावित्रीबाई फुले को सदैव याद किया जाता है। 3 जनवरी सावित्रीबाई फुले जयंती के दिन ही भारतवर्ष में इस पुण्य आत्मा का जन्म हुआ था।

सावित्रीबाई फुले से जुड़ी कुछ खास बातें

सावित्रीबाई फुले को भारत की पहली महिला शिक्षिका के तौर पर जाना जाता है।

भारत की पहली महिला शिक्षिका होने के साथ-साथ सावित्रीबाई फुले नारी मुक्ति आंदोलन की पहली महिला नेता भी थी।

इन सब के साथ-साथ सावित्रीबाई फुले भारत के प्रथम बालिका विद्यालय की प्रधानाध्यापिका भी रहीं।

एक शिक्षिका होने के साथ-साथ सावित्रीबाई फुले अपने पति के साथ समाज सुधारक आंदोलनों में भाग लेने वाली समाज सेविका तथा कवित्री भी थी।

जिस दौर में पिछड़े हुए समाज में दलित महिलाओं की शिक्षा को पाप माना जाता था उस दौर में सावित्रीबाई फुले ने दलित महिलाओं के लिए शिक्षा की अलख जगाई और एक या दो नहीं बल्कि 18 बालिका विद्यालयों की स्थापना की ताकि दलित महिलाओं को भरपूर शिक्षा मिल सके।

साल 1848 में पहली बार महाराष्ट्र के पुणे में भारत के पहले बालिका विद्यालय की नींव रखी गई जिसकी स्थापना सावित्रीबाई फुले ने की थी।

सावित्रीबाई फुले ने केवल महिलाओं के लिए ही नहीं बल्कि किसानों और मजदूरों के लिए भी शिक्षण संस्थानों की स्थापना की। उन्होंने दिहाड़ी मजदूरों और किसानों के लिए रात के समय में पढ़ने की व्यवस्था की ताकि वह दिन भर अपना काम करके रात को शिक्षा ग्रहण कर सकें।

केवल महिलाओं की शिक्षा ही नहीं बल्कि सावित्रीबाई फुले ने समाज सुधारक आंदोलनों में भी अपनी महत्वपूर्ण भूमिका निभाई और छुआछूत, विधवा पुनर्विवाह निषेध, बाल विवाह और सती प्रथा जैसी कुरीतियों का भरपूर विरोध किया तथा उनके खिलाफ आवाज उठाई।

जब सावित्रीबाई फुले ने दलित महिलाओं के उत्थान के लिए शिक्षण संस्थान खोलने शुरू किए तो समाज में उच्च वर्ग के लोगों ने उनका काफी विरोध भी किया। लेकिन इन विरोधियों के बावजूद भी सावित्रीबाई फुले ने अपने कदम पीछे नहीं रखे बल्कि उसी उच्च वर्ग की एक महिला को न्याय दिला कर सब को मुंहतोड़ जवाब दिया।

सावित्रीबाई फुले ने एक विधवा महिला को आत्महत्या करने से रोका जो गर्भवती होने के नाते लोक लाज के डर से आत्महत्या करने जा रही थी। सावित्रीबाई फुले ने उस विधवा स्त्री को अपने घर पर रखा और उसका प्रसव भी करवाया। विधवा स्त्री को बच्चा पैदा होने के बाद सावित्रीबाई फुले ने उसे गोद ले लिया और पढ़ा लिखा कर डॉक्टर भी बनाया।

भारत में जिस समय लिंग और जाति के आधार पर भेदभाव की भावना चरम पर थी उस समय सावित्रीबाई फुले ने सत्यशोधक समाज की स्थापना की और अपने पति ज्योतिबा फुले के साथ मिलकर अंतर जाति विवाह को बढ़ावा दिया ताकि जाति के नाम पर भेदभाव खत्म हो सके।

साल 1897 में भारत में प्लेग का संक्रमण बहुत तेजी से फैला। इस दौरान सावित्रीबाई फुले ने प्लेग से जूझ रहे रोगियों का उपचार करवाया और खुद से उनकी सेवा की इस दौरान वह खुद भी इस भयावह रोग से संक्रमित हो गई और आखिरकार 10 मार्च 1897 को भारत की पहली महिला शिक्षिका सावित्रीबाई फुले का निधन हो गया।[15]

प्रतिक्रिया दें संदर्भ

1. "साल गुजरे मगर सावित्री बाई फुले का महिला शिक्षा का सपना अधूरा". News18 India. अभिगमन तिथि 2021-01-03.
2. ↑ "Savitribai Phule Jayanti [Hindi]: Information, Quotes, Death, Essay". Tube Light Talks (अंग्रेज़ी में). 2021-01-03. अभिगमन तिथि 2021-01-03.
3. ↑ दिल्ली, टीम डिजिटल/हरिभूमि (2019-01-03). "सावित्रीबाई फुले जयंती: सावित्रीबाई फुले की जीवनी | Hari Bhoomi". www.haribhoomi.com. अभिगमन तिथि 2021-01-04.
4. ↑ "कीचड़ और पत्थर फेंक कर रोका, घर से निकाला, पर स्त्री शिक्षा की ज्योत जलाये रखी सावित्रीबाई ने!". The Better India - Hindi (अंग्रेज़ी में). 2019-01-03. अभिगमन तिथि 2021-01-04.
5. Garge, S. M., Editor, Bhartiya Samajvigyan Kosh, Vol. III, Page. No. 321, published by Samajvigyan Mandal, Pune
6. ↑ "Remembering Jyotirao Phule: The Pioneer Of Girls' Education In India". NDTV.com. अभिगमन तिथि 2020-12-18.
7. ↑ "Mahatma Jyotirao Phule: Reformer far ahead of his time". Hindustan Times (अंग्रेज़ी में). 2019-06-27. अभिगमन तिथि 2020-12-18.
8. ↑ "महात्मा ज्योतिबा फुले". Hindi webdunia. मूल से 31 जुलाई 2019 को पुरालेखित.
9. ↑ कलीम, अजीम (11 अप्रेल 2020). "जोतीराव फुले कि महात्मा बनने की कहानी". deccanquest.com. मूल से 10 जनवरी 2022 को पुरालेखित. अभिगमन तिथि 10 जनवरी 2022.. `|access-date=, |date=` में तिथि प्राचल का मान जाँचें (मदद)

| ISSN: 2395-7852 | www.ijarasem.com | Impact Factor: 6.551 |Bimonthly, Peer Reviewed & Referred Journal|

| Volume 10, Issue 4, July 2023 |

10. ↑ पारिक, मोहित (11 अप्रैल 2018). "ज्योतिबा फुले जी का आज जन्मदिन ब्राह्मण वाद के थे विरोधी थे". आजतक. अभिगमन तिथि 10 दिसम्बर 2019.
11. ↑ "Jyotiba Phule: महिलाओं और दलितों के लिए अपना जीवन समर्पित करने वाले ज्योतिबा फुले से जुड़ी 10 बातें". NDTV India.
12. ↑ "सामाजिक समानता दलित उत्थान एवं महिला शिक्षा के अग्रदूत: महात्मा ज्योतिबा फुले". Punjab keshri.
13. ↑ कलीम, अजीम (3 जनवरी 2021). "सावित्री बाई फुले को कितना जानते हैं आप?". deccanquest.com. मूल से 10 जनवरी 2022 को पुरालेखित. अभिगमन तिथि 10 जनवरी 2022.
14. ↑ पारेक, मोहित (2018). "सावित्रीबाई फुले ज्योतिबा फुले जी की धर्मपत्नी समाजसेविका थी उन्होंने भारत देश में सबसे पहिली पाठशाला महिला ओ के लिए खोली थी". आजतक. अभिगमन तिथि 10 दिसम्बर 2019.
15. ↑ Webdunia. "महात्मा ज्योतिबा फुले". hindi.webdunia.com. मूल से 31 जुलाई 2019 को पुरालेखित. अभिगमन तिथि 2020-04-11.

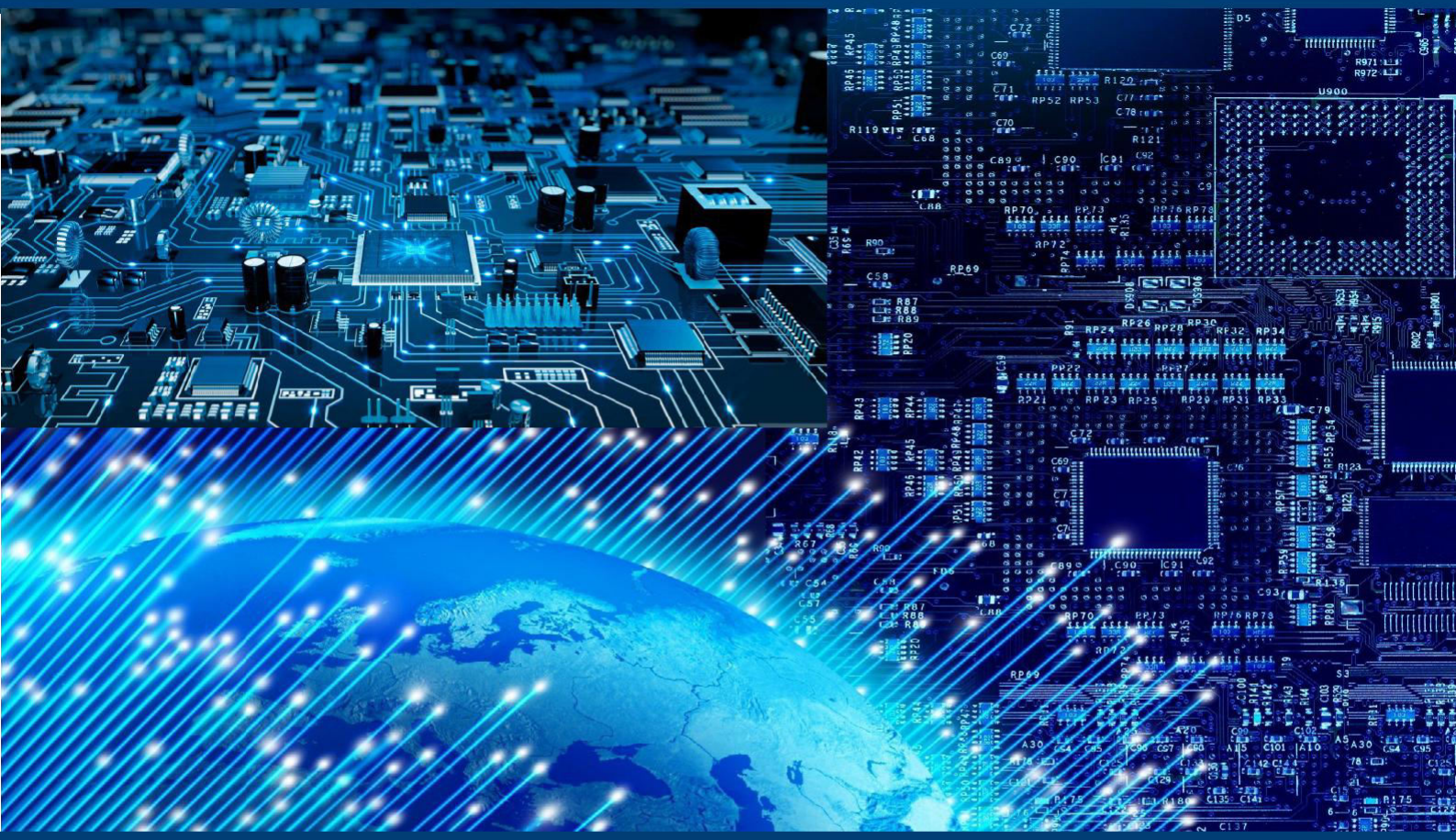

International Journal of Advanced Research in Arts, Science, Engineering & Management (IJARASEM)

| Mobile No: +91-9940572462 | Whatsapp: +91-9940572462 | ijarasem@gmail.com |